भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 30 अंक : 1	15.1.2007 सोमवार (जनवरी - फरवरी)	प्रति अंक : 10.00

'गुणातीत समाज के उत्सवों के संग नए वर्ष का शुभागमन...'

२३ जनवरी – बसंतपंचमी... शिक्षापत्री जयंती एवं **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन!** परम हितकारी करूणाकारी सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने पृथ्वी पर प्रगट होकर अपने आश्रितों को खूब सुखी किया। तन, मन, धन एवं आत्मा की सब प्रकार से रक्षा हो... हमारा जीवन दूसरों के लिए सहज ही प्रेरणादायी बने... चाहे गृहस्थ हो या त्यागी, सब को अपने आश्रम के स्वधर्म में रह कर कैसे जीना – उसका सचोट मार्गदर्शन उन्होंने स्वयं '**शिक्षापत्री**' द्वारा दे दिया। सत्संग और व्यवहार दोनों का समन्वय करके प्रभुमय जीवन जीने का मार्ग बताया। उन्होंने स्वयं आज्ञा करी कि हमारी यह शिक्षापत्री का पाठ साधु, पार्षद तथा सभी सत्संगी भाई-बहनों को नित्य करना और जिसे पढ़ना ना आता हो, उसे इसकी पूजा अवश्य करनी। यूं अध्यात्म के पथ पर अग्रसर चेतना के विकास के लिए शिक्षापत्री द्वारा श्रीजी महाराज ने जीवन को एक नई गति दी और साथ ही अपने आश्रितों के वे जमानती भी बने!

तो दूसरी ओर, मुक्तों के जीवन में **शाश्वत् बसंत लाने** ही मानो **गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का** धरती पर **प्रागट्य था**। केवल संबंधयोग मात्र से प्रगति करा कर उन्होंने गुणातीतभाव को पाना सरल, सहज, आसान बना दिया। तभी तो गुजरात के साक्षर श्री कन्हैयालाल मुन्शी ने कहा था – शास्त्रों का '**अक्षरब्रह्म**' का गूढ़ ज्ञान शास्त्री यज्ञपुरुषदासजी ने सामान्य किसान में कितनी आसानी से डाल दिया है!

गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने अनूठी शूरवीरता से मध्य मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति स्थापित करके युगल उपासना का जो प्रारंभ करा, वह मानो आध्यात्मिक प्रगति को एक नई क्षितिज व तीव्र गति दे दी.... अध्यात्म का सतयुग -स्वर्णयुग शुरु किया। **'अक्षर' के बिना 'पुरुषोत्तम' का आविर्भाव संभव नहीं है और 'पुरुषोत्तम' के बिना 'अक्षर' का अस्तित्व नहीं है;** ऐसे 'अक्षर' और 'पुरुषोत्तम' की **विशिष्टाद्वैत** रूप से **प्रगट की शुद्ध 'युगल उपासना'** में ही आत्मा की परितृप्ति एवं आनंद समाया है। सच, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज द्वारा शुरु किए गए इस भव्य कल्पनातीत कार्य की युगों-युगों तक हर एक मुमुक्षु की चेतना ऋणी बनी रहेगी...सो, आइए बसंतपंचमी के मंगलकारी दिन निमित्त १९७५ में प.पू. काकाजी महाराज द्वारा दिए गए सद्विचार को आत्मसात् करें...

ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज और **योगीजी महाराज** के प्रगटीकरण के साथ
आदि अनादि मूलभूत तत्त्वों की – **अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन 'युगल उपासना'** हो पाई।
ये दोनों दिव्य विभूतियाँ आद्यसंस्थापकों के रूप में यावच्चन्द्रदिवाकरौ रहेगी।
इस प्रकार से गुणातीत ज्ञान में —
साधु द्वारा पाए सम्यक् ज्ञान - **'समझ'** से परब्रह्मतत्त्व का अखंड प्रगटपन सिद्ध होने पर
जब दोनों पाँव अक्षरधाम में माने जाएं, तब ही जीवनमुक्तों को भी
किसी भी प्रकार का उद्वेग, अभाव - अवगुण या क्लेश - खींचातानी रह नहीं सकती
और
भगवान का सुख, शांति, आनंद और बल अखंड मिलता रहता है।
यूं धाम, धामी और मुक्तों की तत्त्व से यथार्थ 'पहचान' और 'समन्वय' अनिवार्य है,
जो प्रत्यक्ष स्वरूप की **अनुभूति वाले परम एकांतिक संत** ही सिद्ध करवा सकते हैं।
सो उनकी 'संगत' भी इतनी ही अनिवार्य है।
यहां सभी मुक्तों के अपने - अपने निजी अनुभवों के पश्चात्
उन्हें परमतत्त्व की - परमात्मा की या प्रभु की एक विशिष्ट अनुभूति करनी पड़ती है।
'अभिप्राय' को जानने वाले ऐसे परम एकांतिक पुरुष की संगत और समागम से ही ऐसे जीवन मुक्तों की
मूल प्रकृति निर्मूल होती है – दिव्यता को पाती है
और तब... सगुण - निर्गुण ऐश्वर्य से परे का सदा दिव्य साकार तत्त्व का एक विशिष्ट अनुभव
वे जीतेजी ही कर सकते हैं।
लेकिन, जहाँ **आपस में बराबरी का भाव** रहता हो
या
प.पू. स्वामीबापा कहते वैसे **अपने आप में ही बड़प्पन का भाव** आ जाए
या
अति बड़े अनुभूति वाले संत को दूसरों की बराबरी के गिनने – गिनाने की विपरीत समबुद्धि रखी जाए
या
ऐसे परम **एकांतिक संत की 'अनुवृत्ति'** का **ख्याल ना पड़े**
और
स्वयं की रीत का - ढब का **सत्संग करने - करवाने लग पड़ें;**
यूं जाने - अनजाने वर्त जाने से द्रोह हो जाए और कभी मन भी अलग हो जाए।
फलस्वरूप सम्यक् निर्दोषबुद्धि दृढ़ नहीं होती है।
इसीलिए एकांतिक की संगत होने पर भी, उनके अंतर की प्रसन्नता बहुत जरुरी है।
और... यह सब **'शास्त्रज्ञान' या 'साधनों' से संभव नहीं ही है –**
रहस्य की यह बात कृपासाध्य महाराज और करुणासागर योगीजी महाराज ने स्पष्ट बता दी है।
जैसे कि – छोटे बालक को तुरंत के बुझे हुए स्टव या चूल्हे को छूने पर
जलन का एहसास होता है – उसके संस्कार पड़ जाते हैं;

फलस्वरूप डर से वह रसोई में जाता ही नहीं।
लेकिन यह अनुभव अधूरा है।
फिर, यदि उसकी माँ सूझ-बूझ वाली और अनुभवी होगी तो –
यह सब क्यों बनता है या बालक को भय – डर क्यों लगता है या वह क्यों एक्साईट हो जाता है यह ढूँढ कर,
उसे फिर माँ साथ में रखकर गर्मी का, ठंड का या बुझी हुई अग्नि का सम्यक् अनुभव कराए,
तो पुराने संस्कार का अनुभव मिट जाता है।
इस तरीके के
बड़े - बड़े महात्माओं, आचार्यों या तत्त्वज्ञों के
सगुण - निर्गुण, साकार - निराकार या अन्वय - व्यतिरेक के झगड़ों को हम जानते हैं।
साधु के ज्ञान में यह नहीं होता है, बल्कि वहाँ तो 'समर्पण' के बाद 'सरलता' सभी के लिए विशेष महत्त्व रखती है ;
*जिससे कि **सारा सत्संग** ही **ब्रह्मनियंत्रित** कहो*
या
***महाराज का सर्वोपरि प्रगटीकरण** कहो*
या
*अखंड वृत्ति से **प्रकाशित स्वरूप को देखना** कहो -*
ऐसी निर्विकल्प दृष्टि - स्थिति प्राप्त होती है।
समुंदर के बीचोंबीच उसका जहाज होता है।
***'प्रत्यक्ष का'** ऐसा परमतत्त्व के साथ का संबंधयोग अति बड़े पुरुष की प्रसन्नता से ही शक्य बनता है।*
तो, योगीजी महाराज ने स्वयं को याहोम करके भी
गुणातीत ज्ञान का यह वारसा हमें बख़्शिश में दिया है ;
वह समझ कर अपने पर ही लागू करें।
*तो, हमारा मूलभूत 'स्व' पिघल कर चैतन्य **'जीवसंज्ञा'** में से **'ब्रह्मसंज्ञा'** को पाएगा*
और
अन्यों को भी सुख, शांति, आनंद और बल दे सकेंगे।
तो, मूर्ति की सिद्धदशा के लिए
***सभी मिल कर - एक होकर** विशिष्ट ज्ञान के रूप में*
ऐसा दिव्य सुहृद्भाव - दिव्य एकता बनाते जाएं
और
दिन में पाँच बार भीतर में उतर कर इस बात का अनुसंधान रखें।
तो थोड़े ही समय में भीतर के द्वार खुल जाकर हमारी 'चेतना' 'परमचेतना' में रहती हो जाएगी।
ऐसी निर्विकल्प दृष्टि और फिर ऐसी ब्राह्मीस्थिति सभी को प्राप्त हो
यही इस बसंतपंचमी के ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज के प्राकट्य दिन पर प्रार्थना।

— प.पू. काकाजी महाराज, १९७५

बसंतपंचमी के बाद आया **३ फरवरी** का महत्वपूर्ण दिन... हमारे प्राणप्यारे **प.पू. काकाजी महाराज के प्रभु साक्षात्कार का** परम पावनकारी **दिन!** जीव को गुणातीत करके – ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने – अनंत चैतन्यों का परम श्रेय करने मानो एक नया सूरज उगा! गुरु की योजना को साकार करने अंतिम सांस तक इस विभूति की तान रही – निशान रहा।

गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को पनौते पुत्र के रूप में स्नेह दिया... प.पू. काकाजी की कई महत्त्वाकांक्षाएं – मनोरथ पूरे करके अपनी मूर्ति में तो खींचे ही, साथ ही गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ भी एक अनन्य संबंध करा के १९५० में धरा से स्थूल विदाई ली। गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी की पात्रता परख कर उन्हें अपना वारिसदार बनाने मानो चुन लिया... सत्संग में एक नया क्रांतिकारी उठाव लेने सिर्फ ३२ वर्ष की आयु के प.पू. काकाजी को साक्षात्कार कराने प.पू. बापा ने जो चुना, वही प.पू. काकाजी के असली नूर व पात्रता का सम्यक् परिचय दे जाता है। १९५२ में प.पू. काकाजी को अखंड ज्ञानसमाधि – साक्षात्कार हुआ और उसी दिन से सत्संग में 'समझ' का ढांचा ही बदला कि –

धरती पर विद्यमान गुरुहरि योगीजी महाराज अक्षरधाम में विराजते अक्षरपुरुषोत्तम का ही साक्षात् स्वरूप हैं। उनका असली स्वरूप पहचान कर उनकी प्रसन्नता पा लेने में ही जीवन की धन्यता है।

सत्संग में 'प्रगट ज्ञान' की मानो एक नई क्षितिज खुली...

गुरुहरि योगीजी महाराज एक आध्यात्मिक दिव्य समाज को अस्तित्व में लाना चाहते थे और... उसके लिए बापा ने दिन चुना **३ फरवरी १९५२** का! सो ही **'३ फरवरी' के दिन को प.पू. पप्पाजी गुणातीत समाज की 'दीवाली – बेसतुं वर्ष' कहते।**

प.पू. काकाजी के संबंध से अंधेरों में भटकती हुई बुद्धि को प्रगट के ज्ञान से भक्ति व उपासना की मानो एक नई दिशा – गति मिल गई।

प.पू. काकाजी तो स्वयं कहते –

'मुझे बापा की कोई क्रिया में कभी शंका या संदेह हुआ ही नहीं। हमारा अपना मन भी कभी डिगा ही नहीं पाए, बल्कि शंका करने असमर्थ बन जाए वो स्वरुप को माना कहा जाए... गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज – योगीजी महाराज को मैं ऐसा धाया हुआ हूँ कि रत्तीभर भी बाकी छोड़ा नहीं है।'

यह था प.पू. काकाजी का स्वरूपसेवन!'

योगीजी महाराज का संपूर्ण रूप से सेवन करके प.पू. काकाजी गुणातीत स्थिति को पाकर खुद योगीरूप ही बन गए और... हमारे में आध्यात्मिक विवेक व प्रत्यक्ष की निष्ठा प्रगटाने जीवनभर एकपक्षीय श्रम लेते रहे... हमारी प्रगति के लिए वे घंटों तक निरंतर भजन करते रहे। **६/डी, ताड़देव में प.पू. काकाजी द्वारा जितनी धून व कथावार्ता हुई है, इतनी शायद हमारे मंदिरों में भी नहीं हुई होगी और सच माने तो उसी की 'रॉयल्टी' हमें मिल रही है , जिसकी बदौलत हम उजले रहे हैं।** हमारे दोष वे अपने सिर पर लेते रहे – हमारे लिए उन्होंने प्रायश्चित किए और भुगतने से बचा कर हमें हमेशा हल्का फूल -आनंद में रखने का भरसक् प्रयत्न करते रहे। आज भी हम में से किसी को भी निःसहाय परिस्थिति में उन्होंने जाने नहीं दिए, बल्कि लौकिक - अलौकिक चमक – दमक से प्रभावित हुए बिना अध्यात्म की राह पर ही अग्रसर रहने का बल देते रहते है।

तो, आओ – प्रत्यक्ष स्वरूप के साथ संबंध दृढ़ करके 'अहं' को गुरुचरणों में समर्पित करें और संबंध वाले मुक्त को **'ब्रह्म की मूर्ति'** ही मानने **३ फरवरी** एवं प.पू. काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन **७ मार्च** – निमित्त दृढ़ संकल्प करें। **प.पू. काकाजी की अनहद् करुणा का – ऋण का – परिश्रम का बयान केवल शब्दों में ही सीमित ना रख कर अब इनके दिखाए रास्ते पर चल कर संबंध वालों में 'सुहृद्‌भाव – मैत्रीभाव – कुटुंबभाव' के सिद्धांत से रसबस होकर प.पू. काकाजी की पहचान बन कर जीवन जीएं।**

परम पूज्य काकाजी ने जब शरीर छोड़ा, तब परम पूज्य पप्पाजी बोले थे –

काकाजी ने १९५२ की समाधि में जिस समाज का दर्शन किया था, वह स्थापित हो चुका है। प.पू. काकाजी का कार्य पूरा हो चुका, सो उन्होंने 'लीला' समेटी है।

यूं **प.पू. काकाजी द्वारा तैयार किया 'गुणातीत समाज' उनकी जीवंत देन है।** जिस भावना से इस समाज का सर्जन किया है–उसकी परवरिश करी है, उसका उनके द्वारा किया जिक्र 'ब्रह्मप्रवाह' में निम्न प्रकार है –

हम एक ऐसा समाज स्थापित करना चाहते हैं जो –
जीतेजी सभी प्रकार का –
अक्षरधाम का ही सुख लेता हो,
जहाँ भेदभाव नहीं – रागद्वेष नहीं,
ये बड़े–वे छोटे ऐसे भेद नहीं
और
आतंरिक एकता व दिव्य एकता से
जीवन जीने वाला समुदाय!
पू. बापा की वह योजना
उनके संकल्प से पूर्ण करनी रही!

इसी भावना को आगे जीवंत रखने प.पू. काकाजी द्वारा १९७६ में करी निम्न बात पर हम ध्यान दें... क्योंकि इससे प.पू. काकाजी हमें शायद चेतावनी ही दे रहे थे कि हम ये भूलें ना करा करें...

वचनामृत लोया के ३ के मुताबिक भगवान और भगवान के भक्तों के लिए क्या ना हो पाए?
ऐसी 'समझ' से मर - मिटने वाला समाज गुरुहरि की केवल कृपा से तैयार हो गया।
समर्पण की सर्वोच्च कक्षा पर समाज पहुँचा तो जरुर है;
*लेकिन... **'समर्पण'** की अपेक्षा **'सरलता** और **सुहृद्‌भाव'***
गुणातीत के विशिष्ट प्रकार के कल्याणकारी गुण हैं – अद्वितीय और अनिवार्य लक्षण हैं।
वैज्ञानिकों और सैनिकों या महत्त्वाकांक्षी भी तो अपने ध्येय के लिए संपूर्ण 'समर्पण' करते ही हैं।
लेकिन, इससे वे अंतर से खूब सुखी हैं, ऐसा तो नहीं ही कहा जाता।
क्योंकि – अपूर्णपन और कल्पना तो बनी ही रहती है – टलती नहीं है!
दादाखाचर जैसे मुक्तराज ने महाराज के लिए सब कुछ समर्पित किया।
*लेकिन **'संग दोष'** के कारण कहो*
या
***बढ़िया संगत में ना रहने के कारण** महाराज के पास वे सरल नहीं रह पाए।*
महाराज ने कहा था कि —
गोपाळानंदस्वामी का समागम करो... लेकिन संजोगवश वह हो नहीं पाया।
परमहंसों ने भी देह को चूर-चूर कर दिया, खूब कसनी सही, भयंकर तपस्या करी - साधन किए,
लेकिन... आपसी भेददृष्टि और तारतम्यता की दृष्टि गई नहीं।
फलस्वरूप, भावफेर में पड़ जातें
और... उस सूक्ष्म मान के कारण –
सच्चिदानंदस्वामी जैसे मूर्तिसिद्ध भी यूं कहते कि गोपाळानंदस्वामी का समागम नहीं करना
और
नित्यानंदस्वामी जैसे प्रखर विद्वान भी यूं कहते कि गोपाळानंदस्वामी के पास नहीं जाना।
तो, आज भी –

- *हृदय प्रशांत हुआ ना हो,*
- *अंतर में प्रभु के दिव्य सुख के अंकुर भी फूटे नहीं हों,*

✳ केवल प्रभुप्रेरित ही जीवन जीने की ताकत आई ना हो,
✳ सम्यक् दिव्यदर्शन हुआ ना हो
या
✳ मन प्रभुवासित बना ना हो

तब भी चैतन्यमाध्यम की कक्षा के गिने जाते या सद्‌गुरु गिने जाते – ऐसे मुक्तों को सावधान रहना पड़े,
अरे! सतत जागृत ही रहना पड़े कि –
सद्‌गुरु या बड़े गिने जाने के नाते कोई सात्त्विकभाव में तारतम्यता की या अलगाव की बातों में यदि वे पड़ गए,
तो एकांतिकी भक्ति की दृष्टि से वे महापाप ही इकट्ठा कर रहे हैं
और
एक या दूसरे तरीके से भक्ति की आड़ में छुपे मान में ही झूम रहे हैं।
सो, ऐसे समर्पित सेवकों –

✳ ये बड़े और वे छोटे
✳ ये तो स्वरूप या साक्षात् और वे तो मुक्त या एकांतिक
✳ इनसे जगत खारा (खोटा) होता है और उनसे नहीं होता;

यूं तारतम्यता में जो पड़ जाते हैं, वह एक तरीके से सुहृद्‌भाव का खंडन ही है
और... भगवत्‌स्वरूप संतों का द्रोह ही है – असेवा ही है।
बेशक, साधक की सर्वोपरि फर्ज़ इतनी जरुर है कि
वचनामृत अत्यं. १६ के मुताबिक **उन्हें मिले एकांतिक संत में सर्वोपरिभाव से वह जुड़ जाए;**
लेकिन ऐसा ही पूज्यभाव अन्य एकांतिकों के प्रति भी होना चाहिए।*
दिव्यभाव या भक्तिभाव में तनिक भी फर्क पड़ना नहीं चाहिए।
हर एक मुक्त को अपना ही माना जाए, इसे ही अक्षरधाम में सच्चे रहे कहा जाए।
सो, सूक्ष्म ऐसा हठ, मान, ईर्ष्या के कारण भूल से भी
ऐसी भेददृष्टि या भावफेर की दृष्टि यदि आ जाती हो,
तो साधक या ऐसे चैतन्यमाध्यम को अपनी ओर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिए।
फलस्वरूप सौ मंजिल की ईमारत की नींव पाताल तक गहरी डल जाए।
यदि भेददृष्टि बनाए ही रखेंगे – 'सभी जोगी के स्वरुप ही हैं' ऐसा नहीं मानेंगे,
तो हम सभी **कनिष्ठ मुक्तावस्था** में ही रहेंगे।
बड़े पुरुष के अंतर की प्रसन्नता के पात्र नहीं बन पाएंगे।

तो अब, **किनारे आया हमारा जहाज डूबे नहीं,** उसकी सतर्कता हमें रखनी है।
बाकी, हमारी हर एक की प्रगति इतनी अच्छी है कि हर एक को याद करके आनंद आता है।
सो, अक्षरधाम की ऐसी अभेददृष्टि सभी को प्राप्त हो और उसके लिए —

---

* वचनामृत अंत्य १६ में जो एक सरीखा लगाव करने के लिए मना किया है, वह तो श्रीजी महाराज की सर्वोपरी निष्ठा के बिना के और अवतारों आदि का जिनके हृदय में प्रभाव हो ऐसे दूसरे धामों के जो भक्त यहां आए थे और बड़े कहे जाते थे उनके साथ प्रीति करने की महाराज ने मना करी है। लेकिन **महाराज के और अक्षरब्रह्म के स्वरूपज्ञान को जिन भक्तों ने सिद्ध किया है उन सभी को तो मानना, पूजना और उनका सेवन करना...**
(स्वा.बात प्र.११-१६७)

प.पू. काकाजी** जो **'आध्यात्मिक सुहृद्भाव'

या

प.पू. पप्पाजी** जो **'आंतरिक रांकभाव'

या

***प.पू. स्वामिजी** जो **'गुलाम होना'** कहते हैं —*

इस मर्म को पकड़ कर प.पू. बापा की भव्य योजना जल्द से जल्द साकार करने की हम सभी को सूझ पड़ जाए, यही इस महामंगलकारी 'तीन फरवरी' के दिन गुरुहरि के चरणार्विंद में प्रार्थना!

— प.पू. काकाजी महाराज की गोष्ठि से, १९७६

३ फरवरी के बाद **१५ फरवरी – प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्रागट्य दिन!** प.पू. पप्पाजी महाराज जैसी गुणातीत विभूति जिन्हें पिता के रूप में प्राप्त हुई, तो स्वभाविकरूप से वे पूर्व के महासमर्थ मुक्त ही होंगे और प.पू. काकाजी महाराज ने उन्हें मूर्तिसिद्ध स्वरूपानंदस्वामी कह कर नवाजे भी हैं। सोने पे सुहागा कि प.पू. बापा ने उन्हें चुना और उनमें ब्रह्मरस भी भरा... गुरुहरि योगीजी महाराज की अनुवृत्ति की भक्ति करने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने बसंतपंचमी के दिन दीक्षा ली और आज गुणातीतभाव में अखंड रहते हुए चंदन की भाँति 'योगी' की सुवास–साधुता की शान फैला रहे हैं... गुरुहरि योगीजी महाराज के वचनों में अटूट विश्वास रख कर प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी का समागम करके दासत्व भक्ति के वे आदर्श बने हैं और खूब छुपे रह कर निर्मानीभाव से संबंध में आए मुक्तों में स्वरूपनिष्ठा, प्रभु के बल से जीने की कला, निर्दोषभाव व सेवाभाव जैसे अनंत कल्याणकारी गुणों का सिंचन कर रहे हैं...

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के चरणों में प्रार्थना कि – आप सभी गुणातीत स्वरूपों ने हर प्रकार से खूब कसनी सह कर हमारे लिए जो राजमार्ग खोल दिया है, उस पर भीतरी माया से लड़ाई लेते हुए भी **'संघनिष्ठा'** से ब्रह्मानंदी मस्ती में रहने और सर्वदेशीय एकता से जीने हमें आप 'संकल्प' से बल देना और प्रत्यक्ष स्वरूप का आसरा रख कर आपकी भांति धैर्य रख कर भजन किया करें ऐसे इस मंगलकारी दिन पर आशिष देना।

१५ फरवरी के पश्चात् **३ मार्च – होली यानि– भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन!** अनादि महामुक्त भगतजी महाराज गृहस्थों के लिए कल्पना से परे का एक अद्भुत व आदर्श जीवन जीए और... अक्षरब्रह्म के साकार स्वरूप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के अंतर की अनहद् प्रसन्नता प्राप्त की।

शिष्य यदि गुरु को संपूर्ण रूप से समर्पित होकर उन्हें अपने पर शासन करने का अधिकार हर प्रकार से दे दे, तो वह गुरु जैसी ही सर्वोच्च स्थिति को पा सकता है। भगतजी महाराज ने ऐसा जीवन जीकर इस बात को डंके की चोट पर प्रमाणित कर दिया।

एक बार मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एक मंदिर में दर्शन करने गए थे... मंदिर के प्रांगण में एक तरफ लगे आम के पौधों को स्वामिश्री ने एक नज़र देखा और सहज ही बोले कि – 'आम के पौधे सूख रहे हैं'। पीछे-पीछे चल रहे भगतजी महाराज ने स्वामिश्री के ये शब्द सुने...भगतजी महाराज की वृत्ति तो अखंड स्वामिश्री में ही रहती थी। स्वामिश्री तो फिर मंदिर में जाकर सभा में व्यस्त हो गए... पर, भगतजी महाराज ने मंदिर में चल रही कथा सुनने का लालच छोड़ कर कुएँ में से मटके भर-भर के पौधों को पानी देना शुरु कर दिया... करीब दो सौ मटके पानी भर कर पौधों में डाले... यह थी भगतजी महाराज की अपने गुरु के मुख से निकले वचन को चातक पक्षी की भाँति बरसात की बूंद को झेल लेने की जीवनशैली!

१९५२ से गुरुहरि योगीजी महाराज के बारे प.पू. काकाजी ने सत्संग में जैसे डंका बजाया था कि– *बापा सामान्य साधु नहीं, बल्कि धरती पर अक्षरधाम का*

साक्षात् स्वरूप हैं...

ठीक उसी तरह सर्वप्रथम भगतजी महाराज ने तत्कालीन समाज में खूब शूरवीरता से यह डंका बजाया था कि– *'ये स्वामिश्री अर्थात् गुणातीतानंदस्वामी '**अक्षरब्रह्म**' का साकार स्वरूप हैं। ये साक्षात् '**अक्षरब्रह्म**' बोलते हैं, चलते हैं, हमारी सेवा ग्रहण करते हैं।'*

यूं उन्होंने अनेक चैतन्यों को स्वामिश्री के स्वरूप की पहचान कराई...

भगतजी महाराज की जयंती पर उनके पवित्र चरणार्विंद में भीतर से प्रार्थना करें कि– गुरु-शिष्य के अनुपम संबंध की आपने धरती पर जो अनोखी मिसाल रख दी... उसी राह पर अग्रसर होकर हमें मिले प्रत्यक्ष स्वरूप को हम राजी करने लग पड़ें...

और.... होली के अगले ही दिन **४ मार्च, धुलेन्डी–प.पू. साहेब का प्रागट्य दिन!** गुरुहरि योगीजी महाराज ने जिसे अपना 'हृदय' कह कर नवाजा ऐसे हमारे लिए दर्शनीय–पूज्यनीय-प्रभुस्वरूप साहेब को सर्वप्रथम कोटि-कोटि वंदन! प.पू. योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी जैसे शूरवीर पात्रों द्वारा एक ओर व्रतधारी बहनों की नई क्षितिज खोली, तो दूसरी ओर इन दोनों भाईयों की सेरेछाया में कर्मयोगी व्रतधारी युवकों के लिए पथप्रदर्शक रूप प.पू. साहेब जैसे सुपात्र को कवायत दिलवा कर युवकों का 'राहबर' चुना। गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति संपूर्ण आतंरिक वफादारी रख कर प.पू. साहेब ने प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी की आज्ञा में पल-पल का जीवन जीया और आज वे व उनकी सेना स्वतंत्र रूप से प्रभु की राह पर निरंतर अग्रसर रह कर देश-विदेश में **श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की उपासना-महिमा** फैलाते हुए '**स्वामिनारायण**' का जयनाद कर रहे हैं।

सभी गुणातीत स्वरूपों के पास प.पू. साहेब स्वरहित होकर माहात्म्यसभर एवं गुरुमुखी जीवन जीए हैं, तो आज स्वयं '**गुणातीत के स्थितप्रज्ञ**' बन कर अनेक चैतन्यों के हृदय सिंहासन पर विराजमान हुए हैं और जीतेजी कल्याण–आत्मा का सच्चा सुख, शांति व आनंद की प्रतीति करा रहे हैं...

प.पू. साहेब के प्रागट्य दिन पर प्रार्थना करें कि हम आपकी भांति हर एक मुक्त के गुणों के बारे ही सोचें... प्रत्यक्ष स्वरूपों में अखंड दिव्यभाव–अखंड निर्दोषबुद्धि रख कर धुलेन्डी का उत्सव शाश्वत् कर लेने की राह पर कदम बढ़ाएं – ऐसे आशीर्वाद हम पर बरसाने की कृपा करना।

✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ....

✤ काफी समय से प.पू. गुरुजी मुंबई में अपने दिव्य परिवार जनों के साथ रह नहीं पाए थे, सो – अब की बार इन्होंने २००६, **१ दिसंबर से १० दिसंबर तक** का **मुबंई - सुरत** रहने का स्कॅडयूल बनाया। १ दिसंबर की दोपहर की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी मुंबई पहुँचे। वहाँ पू. भरतभाई, प.भ. विश्वास पंडयाजी–सौ. प्राची, प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी इत्यादि प.पू. गुरुजी को रिसीव करने खड़े ही थे।

पिछले वर्ष प.पू. गुरुजी जब मुंबई गए थे, तब प.भ. विश्वास पंडयाजी के मातुश्री **श्रीमति अनुसूया बहन** ने उन्हें अपने घर आने खूब आग्रह किया था और प.पू. गुरुजी की राह भी खूब देखी थी। परंतु, समय के अभाव के कारण प.पू. गुरुजी वहाँ जा नहीं पाए, लेकिन अगली बार उनके यहाँ रुकने आने का वादा कर आए थे। सो, एयरपोर्ट से प.पू. गुरुजी प.भ. विश्वासजी के घर गए। सायं उन्हीं के घर ही सत्संग की सभा करी और रात्रि को वहीं ठहरे। सभा में प.पू. गुरुजी ने भगवान स्वामिनारायण के एक-दो प्रसंग पढ़वाए। उन प्रसंगों में बचपन में घनश्याम महाराज (भगवान स्वामिनारायण) ने अपने माता – पिता, मामा एवं सखाओं को अपनी ईश्वरीय शक्ति के जो अनुभव कराए थे, इस बात का निरूपण करते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा –

*सच्चा संत कभी प्रदर्शन के लिए 'चमत्कार' नहीं दिखाता, पर अपने संबंध वाले पूर्व के मुक्तों को प्रतीति कराने वो ऐसे चरित्र करता है। **संत और सिद्ध पुरुष में यह फर्क है।** भगवान अखंड रखे संत का प्रागट्य हर जीव के जीवन में मिठास प्रगटाने ही है। भगवान स्वामिनारायण की मानवजाति को बेमिसाल देन यही है कि उन्होंने ब्रह्मस्वरूप संतों की अक्षुण्ण विरासत द्वारा अपना प्रागट्य धरती पर मानवस्वरूप में अखंडित रखा! जैसे 'माईक' के माध्यम से हमारी आवाज़ कई गुनी होकर दूर तक जाती है, **वैसे इनके माध्यम से हमारी पुकार कई गुणी होकर अर्चिमार्ग से प्रभु तक पहुँचती है।** सो, ऐसे संत के वचन से, इनको आगे रख कर, इनकी स्मृति करके भजन करेंगे, तो हमारा भजन प्रभु को तत्काल पहुँचेगा....*

२ दिसंबर की सायं तक वहीं रुक कर - परिवारजनों को आनंद करा कर प.पू. गुरुजी **प.भ. अनिलभाई मणिक** के सुपुत्र **मेहुल** की शादी के रिसेप्शन में घाटकोपर होकर रात्रि को ग्यारह बजे **पवई मंदिर** पहुँचे। पू. भरतभाई, पू. वशीभाई तथा सभी योगेश्वरों ने आनंदपूर्वक स्वागत किया। प.पू. गुरुजी थोड़ी देर मंदिर के हॉल में बैठे और प.भ. राकेशभाई ने भजन गाया। देर रात्रि होने के कारण प.पू. गुरुजी **प.भ. एस.पी. खण्डेलवालजी** के यहाँ सोने चले गए।

३ दिसंबर की सुबह में पू. वशीभाई द्वारा साक्षात् प्रभु की हाज़िरी का एहसास कराती महापूजा का सभी ने लाभ लिया। वहाँ प.पू. गुरुजी ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का एक प्रसंग बताते हुए बात करी –

*...यूं 'गुणातीत कुनबे' की लाज अब हमें अपने वर्तन से रखनी है। हमारी जवाबदारी खूब है। हम काकाजी के कहे जाते हैं... तो उनकी मूर्ति को तीव्रता से याद करके यदि भजन करेंगे ; वो प्रत्यक्ष होकर हमें जवाब देंगे – प्रोम्प्ट करेंगे ही। प्रगट तो हैं, पर हम अब उन्हें 'प्रत्यक्ष' अखंड रखें। **प.पू. काकाजी ने नई क्षितिज जो हमें खोल दी है, सिर्फ उसी ओर ही अग्रसर रहें!***

सभा के बाद दोपहर को प.पू. गुरुजी ने प.भ. एस.पी. खण्डेलवालजी के घर ठाकुरजी का थाल किया। सायं पवई मंदिर में सत्संग सभा का आयोजन था। इसी सभा में पू. भरतभाई, पू. वशीभाई एवं सभी हरिभक्तों ने प.पू. गुरुजी के मार्च में होने वाले सत्तरवें प्रागट्य दिन की मानो घोषणा करते हुए छोटा - सा उत्सव जैसा किया। प.पू. गुरुजी ने तब एक मर्म की बात करी –

...मेरे दिलोदिमाग़ पर बस 'कुटुंबभाव' छाया रहता है। उसकी वजह ढूंढने मैंने कई बार कोशिश करी... मुझे लगता है कि – प.पू. बापा ने मुझे एक डायरी में आशीर्वाद लिख दिए थे कि – 'हमारा जन्म साधु में ही हुआ है, ऐसा मानना।' जहाँ जिसका जन्म हुआ, वो ही उसका कुटुंब हुआ - परिवार हुआ। मतलब, मेरे लिए तो यह 'सत्संग' ही मेरा परिवार बना ना?

दूसरी ओर... प.पू. काकाजी की संगति मिली, सो बापा की लिखी यह बात मेरे भीतर पनपी और दिलोदिमाग़ पर छाई रहती है। यूं कई बातों का बीज बड़े संत ने हमारे जीव में ही ऐसा डाल दिया होता है, जो हमें पता भी नहीं होता...

प.पू. स्वामिजी** को करोड़ों वंदन हो कि उन्होंने **प.पू. काकाजी द्वारा दिए शब्द 'आत्मीयता'** को हमें फोकस करके बताया कि –**'करना तो यही है।'

*मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों में भी लिखा है कि – **'भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि – यही सत्संग है।'** कुटुंबभाव जितना अधिक से अधिक विकसित हो, वो करना है... परिवारभाव का सत्संग जितना बढ़ा, वही सत्संग का सही विकास कहा जाए...'आयाराम - गयाराम' का सत्संग हमें नहीं बढ़ाना... **प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी ने ताड़देव से ऐसी परवरिश जो करी थी, तो वे मुक्त आज भी अपने साथ ऐसी ही निष्ठा से अडिग खड़े दिखाई पड़ते हैं ना?***

संजोगवश गांधीवादी विचारधारा से अत्यंत प्रभावित लंदन वाले ९४ वर्षीय **पू. शांताबा** इसी दौरान पवई मंदिर आई हुई थीं। १९९५-९६ के वर्ष में वे दिल्ली मंदिर भी आई थीं। प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी का अपनापन उन्हें खूब स्पर्श कर गया। तभी वे प.पू. दीदी के साथ बहनों

के लिए निर्माणाधीन – 'अक्षरज्योति' को देखने गईं। इतने सालों से बन रहे इस भवन के अधूरे कार्य को देख कर वे थोड़ी दुःखी जैसी भी हो गईं।

अतः उसी आत्मीयता की भावना के वश भक्तिभरे हृदय से उन्होंने इस निर्माणाधीन भवन के लिए प.पू. दीदी को एवं पवई की बहनों के लिए पू. योगिनी बहन को पाँच-पाँच लाख रुपये का चॅक स्वहस्तों से भेंटरूप दिया। प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई एवं पवई - दिल्ली की बहनों को स्पष्ट ही लगा कि ये पू. शांताबा ने नहीं, बल्कि प.पू. काकाजी ने ही उनमें प्रवेश करके यह ऐन मौके की सेवा करवाई है। सभा के पश्चात् रात्रि को प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी व सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर गए।

४ दिसंबर को पवई मंदिर के पास हीरानंदानी गार्डन्स में ही **प.भ. विनोदभाई शाह** तथा **प.भ. भगतजी** के घर प.पू. गुरुजी ने पू. भरतभाई, पू. वशीभाई के साथ पधरामनी करी।

५ दिसंबर की दोपहर तीन बजे तक पवई मंदिर में ही पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, पू. घनश्यामभाई अमीन तथा अन्य हरिभक्तों के साथ प.पू. काकाजी की पुरानी स्मृतियाँ ताजा करके, प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी अंधेरी के नज़दीक **प.पू. साहेब** के निष्ठावान सेवक **प.भ. जगतभाई किलावाला** के ऑफिस गए। यहाँ धुन - भजन करके **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** के घर पहुँचे। सायं को सभा यहीं करी। प.पू. गुरुजी व पू. भरतभाई, की निश्रा में पू. वशीभाई, प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी, प.भ. अनिलभाई मणिक, प.भ. किशोरभाई मास्टर, डॉ. महेन्द्र मर्चंट, 'ब्रह्मज्योति' के पू. पंकजभाई के मातुश्री सौ. समताबा, प.भ. विश्वास पंडयाजी का परिवार, प.भ. सुधीरभाई शाह, डॉ. वेद थापरजी, प.भ. एस.पी. खण्डेलवालजी तथा उनके समधी प.भ. केड़ियाजी व कई हरिभक्तों ने सत्संग सभा का लाभ लिया। प.पू. गुरुजी ने दो-तीन प्रसंग बता कर प.पू. भरतभाई द्वारा करी प.पू. काकाजी की बात –

- *दुनिया ना माने, मानव ना माने **तुम** तो मानो!*
- *दुनिया ना माने, मानव ना माने, **तुम यहाँ बैठे हो** वो तो मानो!*
- *दुनिया ना माने, मानव ना माने, **राजू तू** तो मान!*

यह दोहराते हुए बताया कि प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी की हर बात – यदि हम समझते तो, वह सिर्फ अपने लिए ही थी! प.पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के बाद प.पू. पप्पाजी ने कृष्ण - राधा के संबंध की बात करी थी कि –

'सब के कृष्ण गए, पर राधा के कृष्ण नहीं गए। उसके लिए शाश्वत् ही रहे।' *और... सभा के बाद **प.पू. पप्पाजी** ने मुझे कहा – **'मुकुंद! यह बात मैंने तेरे लिए ही करी है।'** दरअसल गुणातीत स्वरूप जो भी बोलते हैं, करते हैं वह चैतन्यलक्षी होता है – जो हमें समझना पड़े।*

भक्तों के प्रति अपनापन और देखरेख की बात करते हुए प.पू. गुरुजी ने बताया –

कुटुंबभाव यानि – अपनों का कॅरिंग! *गुरुहरि योगीजी महाराज का वो वारसा –'देखभाल' का !! दोपहर को एक-डेढ़ बजे एक ट्रेन गोंडल आती थी। प.पू. बापा रोज उससे भक्तों के आने की राह देखते हुए बैठे रहते। जिस दिन कोई भक्त नहीं आता, तो वे उदास हो जाते... भक्तों की ऐसी कॅरिंग करेंगे तो वह उन्हें 'आत्मीयता' का स्पर्श देगी और सही मायने में सत्संग का विकास होगा...*

सभा के पश्चात् प.पू. गुरुजी **प.भ. केड़ियाजी** के घर पधरामनी के लिए गए। देर रात्रि को 'कहानी घर -घर की' टी.वी. सीरियल में 'कमल' का किरदार निभाने वाले **श्री अली अस्गर** प.पू. गुरुजी को मिलने प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के घर पर आए।

६ दिसंबर की सुबह प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के घर से विदा लेकर **सौ. प्राची के मायके** में यानि – **प.भ. सुधीरभाई शाह** के यहाँ नाश्ता करके प.पू. गुरुजी प्रॉपर मुंबई के लिए रवाना हुए। दोपहर तथा रात्रि को ठाकुरजी का थाल **प.भ. देवेनभाई शाह** के यहाँ किया। सायं छोटी सभा में भगवान स्वामिनारायण भाग-१ में से

प्रसंग पढ़वाते हुए प.पू. गुरुजी ने बात करी –

...भले ही गुरु की मूर्ति हृदय में दिखाई देती हो – अखंड भी भले दिखाई देती हो, तब भी प्रत्यक्ष मूर्ति का खिंचाव रहना चाहिए...

सत्संग में यदि टिके रहना हो, तो ऐसे किसी संत के साथ जुड़ जाना। हमें अधिकतर अपनी-अपनी संस्था का ममत्व होता है, लेकिन पप्पाजी कहते संस्था तो गाजर की पीपुडी है। जब तक बजे, तब तक बजानी; वर्ना चबा जाना या फैंक देना... ***ममत्व संत का रखना है – संस्था का नहीं।***

पू. रामानंदस्वामिजी ने नीलकंठ वर्णी (भगवान स्वामिनारायण) को कहलवाया था – 'सत्संग की गरज हो, तो खंभे से चिपके रहना!' खंभा यानि – जिसके आधार पर छत टिकी होती है, ऐसे संत! इस बात का मर्म यह है कि ऐसे स्तंभ समान बड़े संत से चिपके रहना। दूसरा अर्थ यह भी है कि – यदि सत्संग में रहने की गरज हो, तो भले कैसा भी जड़ जैसा लगता भक्त हो, उसके साथ भी आत्मबुद्धि से रहना पड़े...

...हमें अपने गुरु के पास एकदम खुला रहना चाहिए। ***हमें कई बार ऐसा होता है कि अपने दिल की बात साधु को कर देंगे, तो फिर वे हमें बहुत लो एस्टीमेट कर लेंगे कि हम तो ऐसे हैं। वह हमारी सबसे बड़ी भूल है।*** *दरअसल तो* ***साधु के पास हम जितने खुले हो जाएंगे, उतना उसे हमारा विश्वास अधिक आएगा। हम कमज़ोर होंगे, तो वे हमारी ज्यादा कॅर करेंगे...*** *गुरु के पास जैसे हैं, वैसे रहें तो हमें बड़ा फायदा होगा...*

सभा के बाद प्रसाद लेकर रात को **वाल्केश्वर** पर पधरामनी करके प.पू. गुरुजी ताड़देव मंदिर में रूकने गए और पू. वशीभाई, प.भ. हेमंतभाई मर्चंट तथा थोड़े हरिभक्तों के साथ देर रात तक गोष्ठि करी - प.पू. काकाजी के साथ की स्मृतियाँ करीं।

७ दिसंबर की सुबह प.पू. भरतभाई ताड़देव आए। प.पू. गुरुजी ने पूजा में सभी को लाभ दिया। दोपहर तक ताड़देव मंदिर में ही रुके। सौ. शोभनाभाभी के भाई **प.भ. श्रेयसभाई व्यास** ने ठाकुरजी के थाल की व्यवस्था वहीं कर दी थी। सो, सभी ने दोपहर का प्रसाद लिया। ३:३० बजे के करीब प.पू. गुरुजी नए ही संपर्क में आए पुरानी **मशहूर फिल्म अभिनेत्री 'श्यामाजी'** के दामाद **प.भ. संदीपभाई शाह** के घर गए। पहली ही बार मिलने पर भी संतों के प्रति उनका पूज्यभाव व सत्कार देख कर प.पू. गुरुजी एवं साथ में गए हर एक मुक्त आनंदविभोर हो गए। वहाँ से सायं साढ़े पाँच बजे मुंबई सेन्ट्रल पहुँचे और... 'अगस्त क्रांति' से **सूरत** जाने रवाना हुए। रात को साढ़े नौ के करीब सूरत में प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के मित्र प.भ. सतीश बंसलजी – जो कि बहुत कम समय में ही अत्यधिक सद्भावना से प.पू. गुरुजी से जुड़ गए हैं, इनकी होटल 'पार्क इन' गए। साढ़े ग्यारह के करीब **प.भ. मल्कानी अंकल** भी दिल्ली से बाई एयर वडोदरा उतर के सूरत आ गए और फिर प.पू. गुरुजी के साथ ही रहे। होटल 'पार्क इन' में सभी के ठहरने की खूब अच्छी व्यवस्था हुई थी। दूसरी ओर मुंबई निवासी पू. सोहिणी बहन के बहनोई **प.भ. हरिशभाई वखारिया** तथा **प.भ. धनंजयभाई देसाई** ने अपनी गाड़ी सेवा में खड़ी रख दी थी। दूसरे दिन दोपहर को **प.भ. धनंजयभाई** के घर ठाकुरजी का थाल किया। **प.भ. राकेशभाई** ने भजनों की झड़ी लगा कर पूरे वातावरण को दिव्यता से भर दिया। 'तप, ध्यान, योग से प्रभु मिलेंगे...' भजन समझाते हुए प.पू. गुरुजी ने सहज ही बात करी –

...ऐसे भगवान व संत हमारे संचित कर्म तो जिस दिन वर्तमान धराते हैं–कंठी पहनाते हैं उस दिन जला देते हैं। फिर, संतों की आज्ञा में – शिक्षापत्री के मुताबिक रहें तो नए क्रियामाण खड़े नहीं होंगे... ***प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज*** *तो कहते ही हैं – 'धर्म के बंधन मुक्ति के साधन हैं।'*

...सर्वोच्च साधु अपने शिष्यों को हमेशा अपने अन्डर नहीं रखे रखते। *यदि रखेंगे, तो शिष्य का विकास नहीं हो पाएगा। हाँ, सच्चे संत सेवक को गाईडलाईन देकर उसके पीछे रहते हैं...*

यहाँ से सभी वापिस होटल आए। दिल्ली निवासी

पू. हंसाबेन संघवी के रिश्तेदार के यहाँ सायं पधरामनी करके **'गुणातीत ज्योत'** की शाखा में प्रसाद लेने गए। 'हम पंछी एक डाल के...' ऐसा मार्मिक सुस्वागत पाकर सभी भावविभोर हो गए। साथ ही एक खूब मार्मिक एहसास भी हुआ... बहनों ने गुरुहरि प.पू. पप्पाजी की आज्ञा से सूरत की 'गुणातीत ज्योत' का रिनोवेशन कराया था। पर, रिनोवेशन के बाद तबियत लगातार नासाज़ रहने के कारण प.पू. पप्पाजी स्थूल रूप से वहाँ नहीं आ पाए थे। अबकी प.पू. गुरुजी के सूरत जाने पर गुणातीत ज्योत में जाना, मानो प.पू. पप्पाजी द्वारा ही प्रेरित प्रोग्राम बन गया। मानो, प.पू. पप्पाजी ने प्रेरक बन कर प.पू. गुरुजी को वहाँ भेज दिए! प.पू. गुरुजी ने अपनी बातों में कई बार कहा है कि –

ऐसे प्रभुस्वरूप संत भक्तों के वश हैं। भक्तों की पुकार सुन कर प्रभु स्वयं ऐसे साधु पर कब्जा लेकर उससे वह करवा लेते हैं – जो उनके भक्त चाहते हों; फिर उसमें साधु की कुछ चलती ही नहीं।

'सूरत-गुणातीत ज्योत' के भाई – बहनें भी प.पू. गुरुजी व मुक्तों के आने से बहुत ही खुश हो गए थे। बहुत भावना से बहनों द्वारा बनाया प.पू. गुरुजी के मनपसंद व्यंजनों का प्रसाद सभी के दिल को छू गया। प्रसाद लेकर सभी होटल वापिस गए।

९ दिसंबर की सुबह १०:०० बजे आत्मीय स्वजन **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** के साथ **'उकई डेम'** जाने निकले। ज्योत की बहनों को यह प्रोग्राम पता चलने पर उन्होंने रास्ते के लिए उनके फार्म हाऊस से आई मकई की पहली फसल में से खूब भक्तिभरे हृदय का दर्शन कराते हुए मकई उबाल कर-गर्म पानी में डाल कर भेजी, ताकि वह लंबे समय तक गर्म व मुलायम रहे। यूं उन्होंने भीतर में मानो तसल्ली ली कि हमने गुरुहरि प.पू. पप्पाजी के अंतर की प्रसन्नता वाले संत को फसल की पहली मकई खिलाई... उकई डेम पर प.भ. राणा साहेब ने सर्कीट हाऊस में प्रसाद की खूब अच्छी व्यवस्था करी थी। प्रसाद लेकर सभी डेम देखने गए और उसके बारे की जानकारी भी ली। डेम देख कर वापिस आते हुए एक जगह प.पू. गुरुजी ने धुन करी। धुन करके सर्कीट हाऊस वापिस आए और जलपान करके सायं साढ़े पाँच बजे के करीब सूरत वापिस आने निकले। 'पार्क इन' में थोड़ी देर विश्राम करके प.पू. गुरुजी व सभी मुक्त प.भ. राणा साहेब के घर रात को प्रसाद लेने गए।

अगले दिन सुबह होटल में दिल्ली मंदिर के प.भ. नवीनभाई शाह के बड़े भाई की दोनों सुपुत्री व दामाद सभी के लिए भावपूर्ण हृदय से नाश्ता लेकर आए। इन्हीं दिनों संजोगवश **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** सूरत में ही विराजमान थे। सो, अल्पाहार करके प.पू. गुरुजी, प.भ. मल्कानी अंकल व थोड़े मुक्त प.पू. स्वामिजी के दर्शन करने गए। अन्य सभी **प.भ. किशोरभाई देसाई** के घर गए। प.पू. स्वामिजी के दर्शन करके प.पू. गुरुजी भी प.भ. किशोरभाई के घर पहुँच गए। प.भ. किशोरभाई व **सौ. रागिणीभाभी** अभी थोड़े समय से ही सत्संग में आए हैं, लेकिन खूब ही अपनेपन से सत्संग समाज के साथ एक कुटुंबभावना से रसबस हो गए हैं... धुन, भजन, कथावार्ता करके दोपहर को ठाकुरजी का थाल उनके यहाँ किया। अपने मित्र – सगे संबंधियों को भी प.पू. गुरुजी के दर्शन कराने की भावना से उन्होंने बुलाया हुआ था। यहाँ भी भगवान स्वामिनारायण भाग - १ में से प्रसंग पढ़वाते हुए प.पू. गुरुजी ने खूब मर्म की बातें करी –

हम बोलते जरुर हैं कि हमारे लिए तो प्रभु सर्वस्व हैं। पर याद कब करते हैं ? दरअसल भगवान को स्पॅर व्हील मानते हैं बस!

...भगवान या भगवान को अखंड रखे संत का स्वभाव है – आश्रितों की रक्षा करना... *भक्त का लक्षण है कि मुसीबत में सबसे पहली आवाज़ भगवान को ही लगाना।* ***दूसरे उपाय लेने की बजाय सबसे पहला उपाय भजन का ही ले – वो भक्त!***

घनश्याम महाराज ने अपनी भाभी से कहा था – मेरा संबंध जिसे हुआ है, उसे मैं कभी बेसहारा छोडूँगा नहीं। रामचंद्रजी और रावण का संबंध 'दुश्मनी' का रहा, लेकिन

संबंध था ना! 'नंदे या वंदे' – भगवान का नाम लिया, वह संबंध हो गया!

काकाजी कहते थे – अंत तक जो साथ में रहे, वो संत! *अंत तक यानि – हम जीवदशा में हैं; जब तक जीव ब्रह्मरूप ना हो जाए, तब तक संत हमारे साथ – साथ ही रहते हैं...* ***स्वामिनारायण की परंपरा यानि – अखंड सौभाग्यवंता की परंपरा!*** *महाराज ने अपना प्राकट्य अखंडित रखा है... वह पारमेश्वरी चेतना मानवस्वरूप में अखंड रही है। यह हाईरारकी कॉन्स्टन्ट और कन्टीन्यूअस है। ऐसी परंपरा में हम बैठ गए हैं। मूल अक्षर गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि –*

जिसे भगवान की पहचान है, उसका एक पैर अक्षरधाम में है और जिसे भगवान और संत दोनों की पहचान है, उसके दोनों पाँव अक्षरधाम में हैं...

सभा के पश्चात् करीब ७० -८० हरिभक्त प्रसाद लेकर धन्य हुए। यहाँ से वापिस होटल आए और...

सायं ७:३० बजे की 'राजधानी' से वापिस दिल्ली आने के लिए सभी निकले और...सभी की सेवा, भक्ति और भावना को याद करते हुए ११ दिसंबर की सुबह दिल्ली पहुँच गए।

✤ भगवान स्वामिनारायण के आश्रितों के लिए सन् २००६ विशेषरूप से महत्वपूर्ण था, क्योंकि इस वर्ष श्रीजी के प्रागट्य के **२२५** वर्ष पूर्ण हुए। सो, ऐसे मंगलकारी वर्ष में सभी हरिभक्तों को श्रीजी महाराज की प्रागट्य भूमि के दर्शन हों, इस हेतु प.पू. गुरुजी ने २७ दिसंबर से ३१ दिसंबर तक **'छपिया मंदिर'** के दर्शन करने जाने का कार्यक्रम बनाया। दो महीने पहले ही दिल्ली, जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, यू.पी., राजस्थान, एम.पी., गुजरात, मुंबई के लगभग ३०० मुक्तों के लिए छपिया जाने के लिए ट्रेन की टिकटें बुक करा दी थीं।

२५ दिसंबर की दोपहर को **प.भ. राजुभाई शाह** एवं **प.भ. दिलीपभाई शाह** प.भ. प्रमीतभाई संघवी द्वारा भेजे कन्टेनर में भोजन आदि की सारी सामग्री एवं जरूरी सामान भर कर ड्राईवर श्री सोनू के साथ छपिया जाने रवाना हुए। सायं ८ मुक्तों की **'सॅनीटाईझेशन टीम'** छपिया में पूर्व व्यवस्था करने हेतु जाने से पहले मंदिर दर्शन करने आई। तब प.पू. गुरुजी ने दो मिनिट धुन करवाई और आशिष दिए – ***'एक-एक जना दस-दस जनों का काम करे...'*** यूं , प.पू. गुरुजी द्वारा बल लेकर वे ट्रेन द्वारा फैज़ाबाद जाने निकले और अगले दिन २६ दिसंबर की दोपहर तक में छपिया मंदिर पहुँच गए। वहाँ के **मंहत पूज्य ब्रह्मचारी वासुदेवस्वामिजी** से आज्ञा प्राप्त करके वे सारी सुविधा करने में लग भी पड़े।

२७ दिसंबर की सायं 'कैफियत एक्सप्रेस' से प.पू. गुरुजी व पौने तीन सौ मुक्त दिल्ली से निकले और २८ की सुबह साढ़े सात बजे फैज़ाबाद पहुँचे। इससे पहले साढ़े छः बजे के करीब अमदावाद के मुक्त 'साबरमती एक्सप्रेस' द्वारा फैज़ाबाद पहुँच गए थे। **प.भ. राजुभाई शाह** व **प.भ. प्रकाशभाई ठक्कर** ने स्टेशन पर सभी मुक्तों के लिए चाय, गाड़ी व बसों इत्यादि की सुविधा कर रखी थी। फैज़ाबाद से छपिया आते हुए अयोध्या में घनश्याम महाराज की प्रसादिक 'सरयू' नदी के घाट पर सभी एकत्रित हुए। अमदावाद के आत्मीय हरिभक्त **प.भ. कल्पेशभाई ठक्कर** के पिताश्री **प.भ. शिवाभाई** हाल ही में अक्षरनिवासी हुए हैं, सो उनकी अस्थि विसर्जित कराने प.पू. गुरुजी ने धुन करवाई। अस्थि विसर्जन करने के बाद सभी छपिया के लिए रवाना हुए। सुबह ग्यारह बजे के करीब सभी छपिया पहुँच गए। अपने-अपने ठहरने की जगह प्राप्त करके सभी नित्यकर्म से फारिग़ होते ही **'नारायण सरोवर'** पर गए। वहाँ प.पू. गुरुजी ने धुन करते-करते नारायण सरोवर की ११ (ग्यारह) प्रदक्षिणा करने की आज्ञा करी! पश्चात् एक ओर प.पू. गुरुजी ने नारायण सरोवर का जल सभी भाईयों पर छांटा, तो दूसरी ओर **प.पू. दीदी** ने वही जल बहनों-भाभियों पर छांट कर नवीन स्मृति दे दी। यहाँ से वापिस आकर मंदिर में दोपहर का प्रसाद लेकर सभी ने विश्राम किया। सायं पौने छः बजे सभी ने संध्या आरती के दर्शन किए और अल्पाहार

करके सात बजे के करीब प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सभा के लिए एकत्रित हुए... प.भ.हृदय ने भजन गाए और... कुछ हरिभक्तों ने अपने अनुभवों को व्यक्त किया।

प.पू. गुरुजी के साथ दिल्ली, पंजाब, अमदावाद, मुंबई इत्यादि से आए सभी हरिभक्त जैसे ही छपिया पहुँचे और वहाँ सारी रहने - खाने की व्यवस्था, स्नानगृह - शौचालय इत्यादि की जो अत्यधिक स्वच्छता देखी, उससे सभी दंग जैसे रह गए। सभी को सेवकों और मुक्तों द्वारा की गई यह सेवा भीतर तक इतनी स्पर्श कर गई कि – सभी के मुख से सहज ही उद्‌गार निकल पड़े कि – ***ऐसी सुविधा तो हमें अपने घरों में भी उपलब्ध नहीं होती।***

सो, प.पू. गुरुजी ने इन स्वयंसेवकों के प्रति अंतर की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभा में कहा –

'वाकई! छपिया में पूर्व तैयारी के लिए आए स्वयंसेवकों की सेवा काबिलेआशिष है...'

साथ ही एक गहरी सूझ देकर, मर्म समझाते हुए प.पू. गुरुजी बोले कि –

फिलहाल सेवकों की यह सेवा, भक्ति, भावना देख कर हमें भीतर में कितना गुण आ रहा है? पर, कभी ये ही सेवक या मुक्त यदि हमारी मर्जी के मुताबिक व्यवहार ना करें या थोड़ा - सा भी चूक जाएं, तो इन्हीं के लिए हम तुरंत अभिप्राय देने में चूकते नहीं कि ये लोग तो ऐसे हैं... इन्हीं मुक्तों के बारे हम अंट-शंट बोलने लगते हैं – बड़बड़ाहट चालू कर देते हैं। और तो और, उत्तेजित होकर ना कहने के शब्द भी बोल देते हैं। इसका अर्थ यही है कि – हमने इन मुक्तों का दिल की सच्चाई से गुण नहीं लिया। ऊपर-ऊपर से महिमा गाकर अपनी ही अच्छाईपेशी का दिखावामात्र कर लिया...

यूं, हम किस हेतु यहाँ आए हैं और सही अर्थ में अब हमें किस राह पर अग्रसर होना है, वह प.पू. गुरुजी ने स्पष्ट रूप से बता दिया। सभा के पश्चात् सभी ने रात्रि को साढ़े नौ बजे प्रसाद लिया और अपने-अपने विश्राम स्थान पर चले गए।

अगले दिन २९ दिसंबर की सुबह छः बजे सभी मंगला आरती के दर्शन करने गए और... उसके बाद सुबह सात बजे शृंगार आरती के दर्शन करने गए। आठ से नौ के बीच सभी ने अल्पाहार ले लिया और फिर छपिया गाँव में घनश्याम महाराज की बाललीला स्थलों का दर्शन करने स्वामिनारायण धुन करते हुए सब निकले। छपिया आने से दो महीने पूर्व से प.पू. गुरुजी घनश्याम महाराज की इन लीलाओं का पाठ जो दिल्ली मंदिर में करवाते थे, वो प्रसादी के स्थलों के दर्शन सभी को हुबहु देखने को मिले! प्रसादी के स्थल देख कर दोपहर डेढ़-दो बजे तक सभी वापिस आ गए और प्रसाद लिया। सायं फिर संध्या आरती के दर्शन करके, अल्पाहार करने के बाद सभी सभा के लिए एकत्रित हुए। हरिभक्तों ने 'छपिया' दर्शन कराने लाने के लिए प.पू. गुरुजी के प्रति अत्यधिक-तहेदिल से कृतज्ञता प्रकट करी। इस सभा में **छपिया मंदिर के महंत पूज्य वासुदेवस्वामिजी** खूब व्यस्त होने के बावजूद भी आए और सभा में घनश्याम महाराज की अनेक लीलाओं से सभी को विस्तारपूर्वक अवगत कराया। सभा के अंत में प.पू. गुरुजी ने अलग-अलग प्रांतों से आए हरिभक्तों द्वारा पूज्य वासुदेवस्वामिजी का पूजन करवाया और रात्रि का भोजन लेकर सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर चले गए।

३० दिसंबर की सुबह सभी मंगला आरती के दर्शन करने गए और... शृंगार आरती के दर्शन करके सुबह आठ बजे छपिया के नज़दीक के **'गोपीनाथपुर'** गाँव में दिल्ली में निर्माणाधीन 'अक्षरज्योति' में पेईन्ट कर रहे **श्री किशोरजी** के घर नाश्ता करने के लिए गए। इस छोटे से गाँव में उन्होंने प.पू. गुरुजी व सभी हरिभक्तों के लिए टेन्ट-शेन्ट लगवा कर खूब भक्तिभरे हृदय से सारी व्यवस्था करी थी। प.भ. किशोरजी व उनके परिवार की भक्ति-भावना, सेवा, आदर-सत्कार हर एक मुक्त को भीतर तक छू गया... अरे! वहाँ जो हाथ की रोटी बना कर खिलाई गई थी, वह दोबारा बनवाने के लिए प.पू. गुरुजी ने दिल्ली – मंदिर में एक दिन इनके परिवार

को बुलवा भी लिया!

अंत में – प.पू. गुरुजी ने धुन कराई और करीब ग्यारह बजे वहाँ से अयोध्या जाने निकले। निकलने से पहले प.पू. गुरुजी ने सभी हरिभक्तों को अयोध्या तक बस में भजन करते हुए जाने के लिए कहा। सो, धुन करते-करते साढ़े बारह के करीब सब अयोध्या पहुँचे। प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ सीधे फैज़ाबाद 'कृष्णा पैलेस' में चले गए थे। अयोध्या में सभी हनुमान गढ़ी, कनक भुवन वगैरह घनश्याम महाराज के प्रसादी के स्थल – जहाँ घनश्याम महाराज अकसर जाया करते थे, वहाँ दर्शन किए। कई श्री राम जन्मभूमि के दर्शन करने भी गए और आख़िर सभी अयोध्या के स्वामिनारायण मंदिर में आए। यहाँ पर घनश्याम महाराज के प्रसादी के निवास स्थल व कुएं का दर्शन किया। साथ ही घनश्याम महाराज की प्रसादी की हलवाई की दुकान का भी दर्शन किया, जहाँ उन्होंने सुवासिनी भाभी की अंगूठी देकर मिठाई खरीदी थी। दोपहर को अयोध्या स्वामिनारायण मंदिर में ही प्रसाद लेकर सायं पाँच बजे तक सभी वहीं रहे और दो कदम की दूरी पर ही स्थित **'अयोध्या स्टेशन'** जाने सभी पैदल चल पड़े। प.भ. राजुभाई व प.भ. दिलीपभाई ने सभी को स्टेशन के नज़दीक अल्पाहार करवाया और फिर सभी अपना-अपना सामान लेकर प्लेटफार्म पर चले गए। इसी दौरान प.पू. गुरुजी फैज़ाबाद से अयोध्या स्वामिनारायण मंदिर में दर्शन-आरती करके अयोध्या स्टेशन पर आ गए। रात्रि को सवा आठ के करीब ट्रेन स्टेशन पर आई और सभी दिल्ली आने रवाना हुए। अगले दिन ३१ दिसंबर दोपहर को एक बजे सभी पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचे और स्थानीय हरिभक्त यहाँ से अपने-अपने घर चले गए। अमदावाद-मुंबई-पंजाब से आए हरिभक्तों के ठहरने की व्यवस्था 'अग्रसेन' धर्मशाला में करी थी, सो वे वहाँ गए।

सायं ७:३० बजे सभी **नए वर्ष की पूर्व संध्या** पर सत्संग सभा के लिए ताड़देव मंदिर में एकत्रित हुए। छपिया गए कई मुक्तों ने वहाँ के अनुभवों का व्याख्यान किया। इसी दौरान प.भ. राजुभाई व प.भ. दिलीपभाई भी कन्टेनर लेकर मंदिर पहुँच गए थे। केन्टेनर के ड्राईवर सोनू को भी यह शिविर, प.पू. गुरुजी का सान्निध्य व सभी मुक्तों की संगत इतनी स्पर्श कर गई कि नम आँखों से वो बोल उठा कि – ***'दुनिया में ऐसे अच्छे लोग भी होते हैं!'***

सभा के बाद रात्रि को ९:३० से १०:३० सभी ने प्रसाद लिया और फिर **'मध्यरात्रि महापूजा'** के लिए एकत्रित हुए.... प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में पू. यज्ञप्रियस्वामी ने महापूजा संपन्न करी और... अंत में प.पू. गुरुजी द्वारा नए वर्ष के शुभाशीष प्राप्त करके सभी ने सन् २००७ में प्रवेश किया... आज के दिन के अनुलक्ष में प.पू. गुरुजी ने बहुत ही मार्मिक व मननीय निम्न सूत्र लिखवा कर ठाकुरजी के पास रखवाए थे, जिन्हें लेकर यदि हम चलें तो हमारी हर समस्या का हल हमें हमेशा ऑटोमॅटीक मिलता जाएगा...

☆ *।। जय स्वामिनारायण ।।*
'गुड बाय' २००६ – 'सुस्वागतम्' २००७!
शुभं भवतु – मंगलं भवतु

☆ *हमारे प्रभु हमारी किसी भी समस्या से अधिक ताकतवर हैं और 'प्रार्थना' भगवान का 'पता' है;*
अतः 'प्रार्थना के बल' से जीने वाले हर प्रकार से कामयाब रहेंगे ही।
सो, हम कभी भी भूलें नहीं कि –
प्रभु का नाम रटन करके हर छोटी - बड़ी क्रिया का आरंभ करने से 'सरसता' प्रगटेगी।
अतः 'प्रार्थना' हमारी 'जीवनशैली' बनी रहे, ना कि –
आपत्काल में करी प्रभु को पुकार !

☆ *मुझे, तुम्हें और हम सभी को प्रभु एक सरीखा ही चाहते हैं।*
तो आओ, आज हम प्रतिज्ञा करें कि –
हम एक - दूजे को परस्पर चाहें व
एक - दूजे की सेवा करें;
ताकि – हमारे प्रभु को हमारे कारण तकलीफ ना हो।

निमंत्रण

प.पू. गुरुजी की निश्रा में –

3 फरवरी 2007, शनिवार प्रात: 8:00 से 11:00

अशोकविहार 'ताड़देव' **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव**

और

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन मनाएंगे.....

इस मंगलकारी अवसर पर इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	23.1.2007,	मंगलवार	—	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री प.पू. शास्त्रीजी महाराज की जयंती
(2)	दि.	26.1.2007,	शुक्रवार	—	**प्रजासत्ताक दिन**
(3)	दि.	29.1.2007,	सोमवार	—	एकादशी – व्रत
(4)	दि.	3.2.2007,	शनिवार	—	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन** और **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर – दिल्ली का पाटोत्सव**
(5)	दि.	14.2.2007,	बुधवार	—	एकादशी – व्रत
(6)	दि.	15.2.2007,	गुरुवार	—	प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती
(7)	दि.	16.2.2007,	शुक्रवार	—	महाशिवरात्रि, व्रत
(8)	दि.	18.2.2007,	रविवार	—	प.पू. गुरुजी की प्रागट्य तिथि
(9)	दि.	27.2.2007,	मंगलवार	—	एकादशी – व्रत
(10)	दि.	3.3.2007,	शनिवार	—	होली, ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का जन्मोत्सव
(11)	दि.	4.3.2007,	रविवार	—	धुलेन्डी, प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की प्रागट्य तिथि
(12)	दि.	7.3.2007,	बुधवार	—	प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(13)	दि.	13.3.2007,	मंगलवार	—	**प.पू. गुरुजी का ७०वां प्रागट्य दिन** *(24 और 25 मार्च, शनि – रविवार को ताड़देव – दिल्ली में मनाया जाएगा।)*
(14)	दि.	15.3.2007,	गुरुवार	—	एकादशी – व्रत

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,